III
116
929
H
P
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1534
WM

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 929

891.431
G197 M

Mahatma Gandhi ka Chakr
in Hindi
Govt of W.P.
1 copy
77
129

ओ३म्

स्वराज्य का अन्तिम हथियार

जवाहर गीतांजली

महात्मा गांधी का चक्र

सम्पादक—
डा० गिरीजकिशोर वैश्य आगरा।

प्रकाशक—
ज्वालाप्रसाद वर्मा,
आगरा।

प्रथमवार] सन् १९३० [मूल्य ≡)

आर्यभास्कर प्रेस, आगरा।

DEPARTMENT ... RECEIVED 10 DEC. 1930

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No.
Date
GOVT. OF INDIA

ईश्वर प्रार्थना।

भजन

जगदीश यह विनय है जब प्राण तन से निकले।
प्रिय धर्म देश रटते यह प्राण तन से निकले॥
भारत वसुन्धरा पर, हुआ शान्ति संयुता पर।
शस्यश्यामला धरा पर यह प्राण तन से निकले॥
देशाभिमान धरते, जातीय मान करते।
निज देश व्याधि हरते यह प्राण तन से निकले॥
भारत का चित्त पर हो, शुभ नेत्र के निकट हो।
श्री जाह्नवी का तट हो तब प्राण तन से निकले॥

लहर

सुना है तेज करते हैं तुम्हारा धार खंजर की।
करेंगे आजमाइश क्या हुकूमत वह मेरे सरकी॥
अगर पूछो तो यों बोले नहीं जाहिर खता कोई।
मगर कुछ दीख पड़ती है शरारत दिल के अन्दर की॥
बनाके घोसले कितने चमन बरबाद कर डाले।
शरारत उनकी रग रग में भरी है [illegible] बन्दर की॥
बसेरे कब तलक देंगे यह बन्दर छुड़ाकिया उनकी।
नचावेगी उन्हें भी एक दिन लकड़ी कलन्दर की॥
मेरे दर्दे जिगर से आह के नाले से शेवन से।
नजर आती है सूरत सूरते जालिम सितमगर की॥
तमाशा करके मकतल को कहा मेरा जमाई हो।
वह गई कलजम कातिल में खाली मूंठ खंजर की॥

आजादी की दुआ

प्रभु हो मेहर की नजरों से गर इरशाद तेरा हो ।
तो यह उजड़ा हुआ भारत अहा ! आबाद मेरा हो ॥
हजारों साल से ये दर्द लोगों के हवाले है ।
न यूं गैरों के पंजे में वतन बरबाद मेरा हो ॥
खुशी रखता है दुनियाँ को सभी का अन्नदाता है ।
मगर अफसोस फिर भी यह चमन नाशाद मेरा हो ॥
कटें बेड़ी गुलामी की तेरी नजरे इनायत से ।
यही फरियाद करता हूँ वतन आजाद मेरा हो ॥
उठाते हैं मुसीबत पर मुसीबत जिस तरह से हम ।
पड़ा पिंजर में मेरी ही तरह सैयाद मेरा हो ॥

गजल

खौफ आफत से कहाँ दिल में रिहा आयेगी ।
बात सच्ची है जो वह लब प सदा आयेगी ॥
दिल से निकलेगी मरके भी न वतन की उल्फत ।
मेरी मिट्टी से भी खुशबूए वफा आयेगी ॥
मैं उठा लूंगा बड़े शौक से उसको सर पर ।
खिदमते कौम में जो रंजो बला आयेगी ।
सामना सब्रो शुजाअत से करूंगा मैं भी ।
खिंच के मुंह तक जो कभी तेगे जफा आयेगी ॥

गजल

देसी खद्दर की साड़ी मंगादो मुझे ।
जरा चल करके लेक्चर सुनादो मुझे ॥
रेशमी साड़ी विदेशी यह मुझे भाती नहीं ।
पहनकर कोई विदेशी वस्त्र अब आती नहीं ॥
एक चर्खा चलाने को लादो मुझे ।
देसी खद्दर की साड़ी मंगादो मुझे ॥

साबुन विलायती न कभी मैं मंगाऊंगी ।
पोडर विदेश का न कभी मैं लगाऊंगी ॥
जल्दी कंघी स्वदेशी दिलादो मुझे ।
देशी खद्दर की साड़ी मंगादो मुझे ॥
क्रीमें; वर्दैन तेल न हरगिज लगाऊंगी ।
जूती रबड़ की फेंक के देशी मंगाऊंगी ॥
एक चप्पल की जोड़ी दिलाओ मुझे ।
देशी खद्दर की साड़ी मंगादो मुझे ॥
चोटी सुगन्ध और लेवन्डर न लाऊंगी ।
सिर में कभी क्लिप न विदेशी लगाऊंगी ॥
सारी वस्तु स्वदेशी दिलादो मुझे ।
देशी खद्दर की साड़ी मंगादो मुझे ॥

भजन

हे प्रभु ! इस देश भारतवर्ष में शुभ ज्ञान हो ।
स्वप्रेम, गौरव, ज्ञान गुण का प्रेम से सब मान हो ॥ १ ॥
हम में परस्पर प्रेम हो, शुभ कर्म का सञ्चार हो ।
निज देश के उत्थान में दुख द्रोह का संहार हो ॥ २ ॥
सुख से रहें इस देश में हम प्रेम को छोड़ें नहीं ।
निज पूर्वजों के नाम को, सब भूल कर बोरें नहीं ॥ ३ ॥
देश सेवा में मनुज को, धैर्य से अनुराग हो ।
निज देश उन्नति मार्ग के, सब कंटकों का नाश हो ॥ ४ ॥
अज्ञानतम का नाश हो, सुज्ञान का विस्तार हो ।
सर्वत्र ही दारिद्र रूपी काल का संहार हो ॥ ५ ॥
हर देशवासी के हृदय में धर्म का संचार हो ।
जगदीश ! भारतवर्ष का अब शीघ्र ही उद्धार हो ॥ ६ ॥

ग़ज़ल नम्बर २ (मातृ बन्दना)

हे मातृ भूमि ! तेरे, चरणों में शिर नवाऊं ।
मैं भक्ति भेंट अपनी, सेवा में तेरी लाऊं ॥ १ ॥
माथे पै तू हो चन्दन, छाती पै तू हो माला ।
जिह्वा पै गीत तू हो, मैं तेरा नाम गाऊं ॥ २ ॥
जिससे सपूत जन्मे, श्रीराम कृष्ण जैसे ।
उस तेरी धूलको मैं, निज शीस पै चढ़ाऊं ॥ ३ ॥
ऐ देश मान वाले, चढ़ कर उतर गये सब ।
गोरे रहे न काले, तुझको ही एक पाऊं ॥ ४ ॥
सेवा में तेरी अपने, भेदों को भूल जाऊं ।
वह पुन्य नाम तेरा, प्रति दिन सुनूं सुनाऊं ॥ ५ ॥
तेरे ही काम आऊं, तेरा ही मन्त्र गाऊं ।
तन और देह तुझ पै, बलिदान मैं चढ़ाऊं ॥ ६ ॥

ग़ज़ल

हिन्दुस्तान की कमाई देखो तो कस कुल कोड़ी छः पाई है ।
उसमें ख़र्च होता है जितना फ़ैशिन उसकी बनाई है ॥
तीन की टोपी क़मीज़ डेढ़ की टाई बारह आने का ।
पांच का चश्मा आठाने का कालर टाई लगाने का ॥
नहीं आठ से कम लगते हैं वास्कट कोट बनाने का ।
कमसे कम पतलून चार का गैलिस बारह आने का ॥
तीसरे दिन चार आने इनकी लगने लगी धुलाई है ॥१॥
साढ़े सात से कम नहीं लगते वेस्टैण्डवाच मंगाने में ।
एक रुपये से कम नहीं लगता पैंसी बेत उठाने में ॥
डासन का फ़ुलबूट सात का है मशहूर ज़माने में ।
ब्रुश और पालिश की शीशी दोनों मिलें नौ आने में ॥
ग्रिटिश की ज़ुर्राब की क़ीमत दस आने ठहराई है ॥२
तीस की सेकिंडहैंड साइकिल यह भी आज कल का फ़ैशन ।

एक मील नहीं चल सकते हैं पैदल यह दिल्ल व दुनियत ॥
सवा रुपये का घर में सलीपर रखना पड़ता मजबूरन ।
गलती हो तो कीजे मुआफ़ मैं बतलाता हूं तखमीनन ॥
एक आना रोजाना इनसे लेता डूटू नाई है ॥३॥ दिं०
कंघा साबुन तेल सेफ्टीपिन तुमको गिनवाऊं क्या ।
एक रुपये से कम में उनकी क़ीमत और लगाऊं क्या ॥
सिगरेट का जिस कदर खर्च है यह तुमको समझाऊं क्या ।
"चन्द्र" कहैं यह खर्च थर्ड का फर्स्ट क्लास बतलाऊं क्या ।
इस फजूल खर्ची ने हा भारत से भीख मंगाई है ॥४॥

ग़ज़ल

आंखों से फिर दिखा दो भगवन् वही ज़माना ।
वह राज्य चक्रवर्ती वह शाने खुसरवाना ॥
इन्सान शेर दिल को पस बुज़दिली मिटा दो ।
भीष्म व भीम सा दो तर्ज़े बहादुराना ॥
अर्जुन से तीर अफ़गन पैदा यहां बशर हों ।
तीरे अदू का हर्गिज़ होवे नहीं निशाना ॥
हो प्रेम भाइयों में रामो लषण सा पैदा ।
दिखलादो फिर भारत सा हुब्बे बिरादराना ॥
आज्ञा में मात पितु के सब कुछ निसार करदें ।
श्री राम सा दिखादो पितु भक्ति मुख़लिसाना ॥
गौतम कणाद आदि की फिर कुटियां यहां दिखावें ।
पढ़ने को मिल सकें फिर तहरीर फ़ख-सफाना ॥
मिट जांय आन पर फिर राणाप्रताप से हम ।
बहरे वतन हों पैदा जज़बाते आशिक़ाना ॥
गृह देवियों के दिल में होवे ख्याल पैदा ।
सीता सी प्राणपति से बर्ताव ख़ादिमाना ॥
गुरुकुल की वह प्रणाली रायज यहीं पर करके ।

कृष्णो सुदामा जैसा दिखला दो दोस्ताना ॥
सौदाय इक ऋषि सा फिर तो जरा दिखा दो ।
तफ़सीर वेद की हो तक़रीर आलिमाना ॥
प्रहलाद और हकीकत से हों धर्म पर फ़िदा ।
सहते रहे हमेशा हरकाते ज़ालि-माना ॥
"आदिक" बहार आये उजड़े हुए चमन में ।
लब पर हो बुलबुलों के फिर क़ौम का तराना ॥

भजन

भटक रही हैं दुखों में अब हम बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन् ।
विनय यही है हमारी हरदम बचाओ स्वामिन्० ॥ १ ॥
विषय विकारों में फँसकर हमने भले बुरे का न ख्याल रक्खा ।
शरन में आये तुम्हारी भगवन् बचाओ स्वामिन्० ॥ २ ॥
बनीं अनारी कहाती अबला न ज्ञान है कुछ न ध्यान है कुछ ।
धरम करम सब बिसार बैठीं बचाओ स्वामिन्० ॥ ३ ॥
कलह अविद्या की आग दिल में धधक २ कर जला रही है ।
कुबुद्धि जग की बहा के धारा बचाओ स्वामिन्० ॥ ४ ॥
गृहस्थ आश्रम किसे हैं कहते पती की पूजा का अर्थ क्या है ।
दया धरम का मरम न जानें बचाओ स्वामिन्० ॥ ५ ॥
नहीं पढ़ाते हमें हैं कोई न जाने इसका सबब भी क्या है ।
बनाते मूरख शरम न आते बचाओ स्वामिन्० ॥ ६ ॥
हमीं थीं सीता हमीं थी लक्ष्मी हमीं को कहते थे लोग देवी ।
हमीं से उपजे थे वीर लाखों; बचाओ स्वामिन्० ॥ ७ ॥
हमारा आदर उठा है जब से तभी से भारत चमन है सूना ।
तभी से कायर कपूत उपजे बचाओ स्वामिन्० ॥ ८ ॥
कभी ये भारत चमक रहा था; सितारा बनके हमारे बल से ।
परन्तु अब ये उजड़ गया है बचाओ स्वामिन्० ॥ ९ ॥
तुम्हीं से आशा हमें है सारी; लगी हुई है नज़र तुम्हीं पर ।
तुम्हीं हो रहबर दिखाओ रस्ता बचाओ स्वामिन्० ॥ १० ॥

भजन

धर्म के नाम पर प्यारो तुम्हें मरना नहीं आता।
लहू से कासए तकदीर का भरना नहीं आता ॥
छुरी से पेट कटवाना तुम्हें आता नहीं प्यारो।
हकीकत की तरह कुरबान सर करना नहीं आता ॥
धर्म की राह पर चलना तुम्हें तो होगया मुशकिल।
छुरी की धार पैनी पर कदम धरना नहीं आता ॥
तुम हो औलाद शेरों की मगर अब वह हस्तीद में।
समय का फेर है औधा तुम्हें तरना नहीं आता ॥
तबाही का तुम्हारी एक ही कारण है बस मित्रो।
तुम्हें कहना तो आता है मगर करना नहीं आता ॥
'मुसाफिर' सहवीसद महवी है तेरी हिम्मत पर।
धर्म की राह में हो नर तुम्हें डरना नहीं आता ॥

भजन

धर्म बांसुरी तू बजाए चला जा।
जो सोते हैं उनको उठाये चला जा ॥धर्म०॥
मिटा दे तू नफरत को यक लख्त दिल से।
तराना मुहब्बत का गाये चलाजा ॥धर्म०॥
न दिल में जगह दे तनफ्फुर को हरगिज।
प्रेम और उल्फत बढ़ाये चलाजा ॥ धर्म० ॥
उठादे यह तफरीक सब जो हो महकी।
तू नजरों में सब की समाये चलाजा ॥ धर्म ॥
मुखालिफ से डरकर न तू हार हिम्मत।
सदा ओ३म की तू लगाए चलाजा ॥ धर्म० ॥
खतर क्या है गह दूर मंजिल है अपनी।
कदम अपना आगे बढ़ाये चलाजा ॥ धर्म० ॥
अछूतों के कर वहम को दूर दिल से।

गले से तू ग़म को लगाये चलाजा ॥ धर्म० ॥
न कर ग़म अगर है मुखालिफ़ ज़माना।
तू नेकी का डंका बजाए चलाजा ॥ धर्म० ॥
फ़िदा होके ऐ वर्मा अब कौम पर तू।
तरक्की का ज़ीना बनाए चलाजा ॥ धर्म० ॥

भजन

मेरे प्यारे चरखे आओ।
शौर्य सिखाओ ! दुःख नशाओ ! सुख के साज सजाओ।
मेरे प्यारे चरखे आओ।
नव फ़ैशन का भूत उतारो; अन्धकार आँखों से टारो।
भारत का व्यापार सुधारो; मंत्र स्वदेशी का गुँजारो ॥
चमक उठे भारत का गौरव ऐसा तेज दिखाओ।
मेरे प्यारे चरखे आओ ॥
दुखद दीनता दूर भगादो; नव जीवन की ज्योति जगादो।
आशा पर वायु बहादो; कर्त्तव्यों में हमें लगादो ॥
जो भूखों मरते हैं उनको देकर अन्न जिलाओ।
मेरे प्यारे चरखे आओ ॥
जब से हमने तुझे भुलाया; पराधीनता को अपनाया।
तबसे अपना हुआ पराया; संकट पर नित संकट आया ॥
पर अब भंग हुई है निद्रा आओ धाक जमाओ।
मेरे प्यारे चरखे आओ ॥
कहाँ गया वह माल ख़ज़ाना; मिलता नहीं पेटभर दाना।
सूझा अपना माल लुटाना; अब तेरा गुण हमने जाना ॥
तू भारत का रखवारा था अब भी प्यारे उसे रखाओ।
मेरे प्यारे चरखे आओ ॥
झमकादे चिहरों पै लाली, चमका दे फिर पूर्व प्रणाली।
करदे भारत को सुखशाली, भरदे कोष पड़े जो खाली ॥
भारत में घर घर फिर अपनी मीठी तान सुनाओ।

मेरे प्यारे चरखे आओ ॥
अब सब तुझको अपनायेंगे, दाँत न दूर दूर दिखलायेंगे ।
निश्चय ही सुख को पायेंगे, संतत तेरे गुण गायेंगे ॥
नहीं फँसेंगे अब फैशन में दारिद दूर बहाओ ।
मेरे प्यारे चरखे आओ ॥
तेरा सूत हमें सुख देगा, पराधीनता दुख हर लेगा ।
भाव स्वदेशी के भर देगा, हमें एक रँग में रँग देगा ।
स्वर्ग सौख्ययुत देश बनेगा विजय ध्वजा फहराओ ।
मेरे प्यारे चरखे आओ ॥

भजन

वैदिक धरम का जलवा संसार को दिखादो ।
तारीकियें न हालत हर सिम्त से मिटादो ॥
दैरो हरम के झगड़े कुछ भी रहे न बाक़ी ।
वहदानियत का क़ायल हर शख़्स को करादो ॥
सिखला दो इक परस्ती वेदों का ज्ञान देकर ।
उस्ताद फिर जहाँ का बनकर कर जरा दिखादो ॥
वह मारफ़त इलाही वह तर्ज आरिफ़ाना ।
वह राजे योग विद्या हर फ़र्द को बतादो ॥
संसार का तअल्लुक़ करदो मुहब्बताना ।
सब मत मतान्तरों के झगड़े बस अब मिटादो ॥
बस ओ३म् का अलमहो हाथों में फिर तुम्हारे ।
पैग़ाम वेद अक़दस घर घर में जा सुनादो ॥
हो यज्ञ के धुयें से सारा जहाँ मुअत्तर ।
सतयुग का फिर ज़माना सादिक यहां बुलादो ॥

ग़ज़ल पीलू

है सब कुछ मैं फिर कुछ नहीं सा हुआ हूँ ।
मैं हैरत ज़दह सूरते आइना हूँ ॥

मकां है मेरा पूछिये तो जहां में ।
मगर सूरते सर गुमक फिर रहा हूं ॥
हुआ ख्याल जब से मैं अपने दम का ।
तभी दम से मैं दम बखुद हो रहा हूं ॥
वे सूरत बनी उनके आईने रू में ।
कि मैं आपही आईना बन गया हूं ॥
तअज्जुब में अपने मैं हूं आप हैरां ।
समझता नहीं कि मैं क्या देखता हूं ॥
नहीं दूसरा दूसरा मैं ही मुझसा ।
जो देखो तो मैं आपही दूसरा हूं ॥
दुई जिसके दिल से मिटे वोही समझे ।
कि मैं किस तरह एक का दो हुआ हूं ॥
न समझे कोई काल असरार मेरा ।
सरासर मेरा हाल मैं कह रहा हूं ॥
नज़र जिस पै आलम की पड़ती नहीं है ।
वतन उसको मैं आंख में देखता हूं ॥

भजन

भक्त के बस में हैं भगवान ।
समझ मन मूरख ये अज्ञान ॥

झूठे बेर शबरी के खाये, साग विदुर के प्रेम से खाये ।
त्याग दुर्योधन का पकवान ॥ भक्त० ॥
भक्त हेत डोले बन बन में बलकल बस्त्र धार के तन में ।
तोड़ा रावण का अभिमान ॥ भक्त० ॥
भक्त हेत जो प्यादे धावे ग्राह से गज का फन्द छुड़ाये ।
भमर दे धर तू उन्हीं का ध्यान ॥ भक्त० ॥

भजन नं०

खूने दिल अब तो यहां आंसू बहाना है मना।
अन्दलीबों को क़फ़स में चहचहाना है मना॥
बाग़ अजायब तो देखो कह रहा सैय्याद यह।
वक़्त ज़िबहा बुलबुलों को तड़फड़ाना है मना॥
वक़्त ज़िबहा जानवर को देते हैं पानी पिला।
दूसरे इन्सान को पानी पिलाना है मना॥
मेरे खूं से हाथ रंग कर बोले क्या अच्छा है रंग।
अब हमें तो उम्र भर मरहम लगाना है मना॥
अय मेरे ज़ख्मे जिगर नासूर बनना है तो बन।
क्या करूं इस ज़ख्म पर मरहम लगाना है मना॥
खूने दिल पीते हैं अख़गर खाते हैं लख़्ते जिगर।
इस क़फ़स में कैदियों का आबोदाना है मना॥

ग़ज़ल

सेवा में तेरे भारत, तन मन लगायेंगे हम।
फिर स्वर्ग का सहोदर, तुझको बनायेंगे हम॥
तुझ से जने हैं तूने पालन किया हमारा।
उपकार जितने करता, क्या २ गिनायेंगे हम॥
तेरे ऋणों का बोझा, सर पर धरा हमारे।
करके प्रयत्न पूरा उसको चुकायेंगे हम॥
तेरे लिये जियेंगे, तेरे लिये मरेंगे।
तेरी ही सेवा में यह, जीवन बितायेंगे हम॥
घनघोर दुख घटा भी हम पर घिरी खड़ी हो।
क्षणमात्र भी न तुझको, जी से भुलायेंगे हम॥
तू स्वर्ग है हमारा तू सौख्य-गृह हमारा।
तुझसे ही नेह नाता अब तो लगायेंगे हम॥
जब जब मरें तुझी में, तब तब सदा जन्म लें।

धर्म के बल ईश्वर से यह मनायेंगे हम ॥
धीरज बिना है तेरा दुख ने है मुझको घेरा ।
दुख से तेरे दुखी हो आँसू बहायेंगे हम ॥
प्यारे सुमन खिलाके, कुछ फोड़ मधु के मारे ।
बे होश भी पड़े हैं, उनको जगायेंगे हम ॥
परमेश ! दो हमें तुम, पूरन पुनीत बल को ।
बिन आप के सहारे, कुछ भी न पायेंगे हम ॥

शेर

हे दयामय ! अब दुखी भारत का बेड़ा पार कर ।
बाहुबल, विद्या, विभव, धन आदि का विस्तार कर ॥१॥
गिरते गिरते ठोकरें खाते नहीं कुछ बल रहा ।
बहुत दुख भोगे प्रभु करके दया अब पार कर ॥२॥
हो चुका उसके लिये अफसोस करना भूल है ।
अब किसी विधि दीनबन्धो ! दीन का निस्तार कर ॥३॥
आत्म दान प्राप्त जैसे हम करें निज देश को ।
हम में फिर भीषण शिक्षा की शक्ति का संचार कर ॥४॥
आत्म बल, विद्या, कलाकौशल का फिर से बीज बो ।
शस्त्र-शासन युक्त शुभ व्यापार का व्यवहार कर ॥५॥
देश सेवक सब स्वर से एक होकर गा रहे ।
है निवेदन "दीन" से उद्धार कर उद्धार कर ॥६॥

गजल

भगवन् भारतवर्ष के दुःख कुछ कहे जाते नहीं ।
अब तक सहे हैं बहुत पर अब सहे जाते नहीं ॥१॥
या तो हमारी विनय को प्रभु ध्यान धर सुन लीजिये ।
हो अगर रूठे तो अब मृत्यु हमें दे दीजिये ॥२॥
प्राण जाय तो जाय नहीं परवाह करेंगे ।
और जीवन भर हम सदा देश का दुख हरेंगे ॥३॥

सोतों को मैं जगादूं नग़मा वतन का गाकर ।
बिछुड़ों को फिर मिलादूं धुन प्रीति की उठाकर ॥५॥

गजल

ख्वाहिश मेरी है या रब ! अर्जुन मुझे बनाना ।
शहज़ोर भीम करना मोहन मुझे बनाना ।
सानी भरत का मुझको, लछमन मुझे बनाना ।
बजरङ्ग बनके राम की लङ्का को फूंक डालूं ।
बहरे दहन को फाँदूं कोहे अलम उठा लूँ ॥१॥

यह आस मेरी पूरी ऐ रब्बे दो जहां हो,
जोशे द्रोण दिल में तनमें करन सी जां हो ।
बुशरे से मेरे दम खम सहदेव का अयां हो,
मेरी रगों में फिर से भीषम का खूं रवाँ हो ॥
भालोंकी चोट सहलूं हारूं मगर न हिम्मत ।
तीरों की सेज पर भी हो लेटने में राहत ॥२॥

सांगा की तरह खालूं खुश होके तेगका फल,
हो बाजुओं में पैदा प्रताप का सा कस बल ।
क़ौमी वकार पर मै मिटजाऊं मिस्ल जयमल,
हिफजे वतनकी खातिर आला बनूं कि ऊदल ॥
अहलो अयाल छूटें, सर जाय, जान जाये ।
माथे पै बुज़दिली की लेकिन शिकन न आये ॥३॥

हासिल मुझे ध्रू की हो जाय इस्तकामत,
या बख्श दे तू मुझको प्रहलाद की सी हिम्मत ।
पूरन की तरह कायम रक्खूं मैं अपना जत सत,
होकर धर्म पै कुरबां बन जाऊं मैं हकीकत ॥
कटजांय दस्तो पातक, उड़जाय जिस्म से सर ।
लेकिन न हर्फ आये मुतलक मेरे धर्म पर ॥४॥

मुझको यह दस्ते कुदरत या रब अगर मैं पाऊं;
महमूद का वतन के बीड़ा अभी उठाऊं।
कौमी निशां को ले के आलम में घर आऊं;
भूले हुए फंसाने फिर से 'फलक' सुनाऊं ॥

गजल।

हम तो दुनियां में हुए पैदा थे मरने के लिए।
आये हैं यारो जहां में सैर करने के लिए ॥
प्यार जिनको जिन्दगी में क्यों तू करता है गरूर।
रास्ता वह एक है सबके गुजरने के लिए ॥
मौत के पंजे में तू हर वक्त रहता बेखबर।
जुल्म मत बेबस पे कर बेड़ी पहनने के लिये ॥
तोप तीरें सब धरी रह जायगी मगरूर सुन।
जबकि परवाना मिलैगा कूंच करने के लिए ॥
सामने परमेश्वर के देना सबको है हिसाब।
कर भलाई वक्त पर इम्दाद करने के लिए ॥

गजल

जमात जिसका ये कुल बनाया हुआ है।
वही सब घटों में समाया हुआ है ॥
नहीं दूसरा कोई है उससे बढ़कर।
जो अपने में आपी भुलाया हुआ है ॥
हर एक शै जो हैगी यहां रंगबिरंगी।
ये जलवा उसी का बनाया हुआ है ॥
उसी की अकल में यह आती हैं बातें।
शरण वेदमत की जो आया हुआ है ॥
है ताकत उसी में ही मुंह खोलने की।
जो कुछ भेद वेदों का पाया हुआ है ॥
धरमदास अपनी उसी की फिकर के।
करोड़ों की दौलत लुटाया हुआ है ॥

उपालम्भ

दरिया से हुबाब को है ये सदा तुम और नहीं हम और नहीं ।
मुझको न समझ अपने से जुदा तुम और नहीं हम और नहीं ॥
आईना मुकाबिले रख जो रखा झट बोल बताय अक्स अपना ।
क्यों देख के यार हैरान हुआ तुम और नहीं हम और नहीं ॥
शाने ने कहा जिस्मन से कहा चुप रहा इस जा नहीं चूनो चरा ।
वहदत की झलक कसरत ने दिखा तुम और नहीं हम और नहीं ॥
कूज़ा मूल में आके देही देखा है मेरी ही जात से जलवे नुमा ।
जैसे पंखे के तार का हो रिश्ता तुम और नहीं हम और नहीं ॥
तू क्यों समझा मुझे गैर बता अपना रुख भी न हमसे छुपा ।
चिक परदा उठा टुक सामने आ तुम और नहीं हम और नहीं ॥

गज़ल

हमें गर वह सताने के लिये तैयार बैठे हैं ।
तो हम भी सर कटाने के लिये तैयार बैठे हैं ॥
चाहे जितना सता लें दिल दुखालें है कसम उनको ।
यहाँ भी गम उठाने के लिए तैयार बैठे हैं ॥
तरस उनको नहीं आता हमारी दीन हालत पर ।
बे वजह दिल दुखाने के लिए तैयार बैठे हैं ॥
छीन कर सालोंभर सारा हमारा हर बहाने से ।
हमें मुफलिस बनाने के लिये तैयार बैठे हैं ॥
आजकल दिन हैं गर्दिश के इसी से तुमको ऐसरषु ।
अभी हंसी सुनने के लिए तैयार बैठे हैं ॥
वफादारी के एवज में किया रोजन बिल जारी ।
मेरी इज्ज़त घटाने के लिये तैयार बैठे हैं ॥